गीत सुमीत

(हिंदी उर्दू रचनाओंका गुलदस्ता)

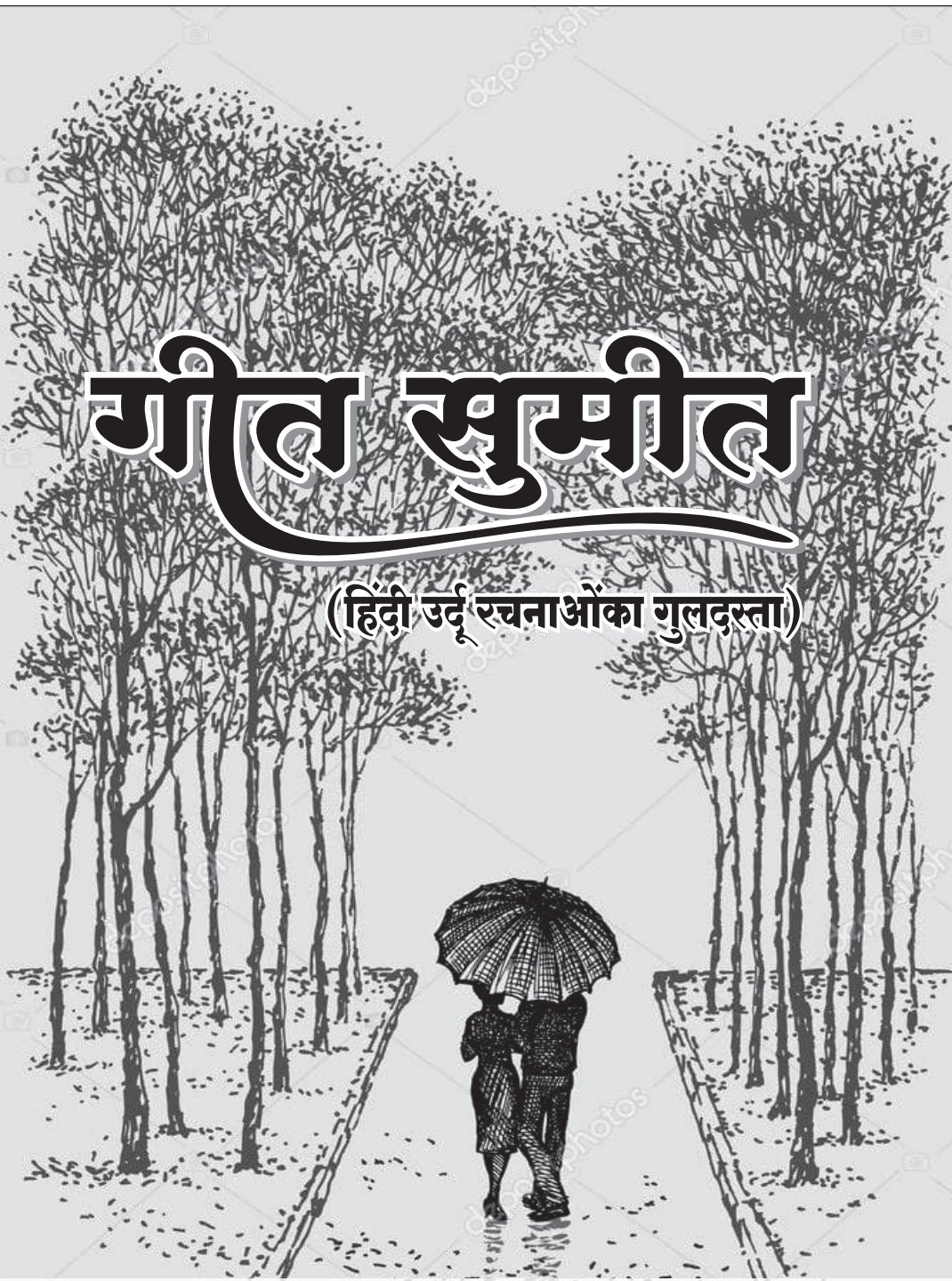

प्रा. गिरीश चत्रू पाटील

हिन्दी-उर्दू रचनाओंका गुलदस्ता

गीत-सुमित

गिरीश पाटील

गीत-सुमित
Geet-Sumit

© गिरीश पाटील

पत्ता : 'साईस्नेह', आशिष रो-बंगलो नं. १, वासन नगर,
पोलिस कॉलनी शेजारी, पाथर्डी फाटा, नाशिक - ०९

प्रथमावृत्ती : १५ ऑगस्ट २०१७

प्रकाशक : इनसाईट पब्लिकेशन्स, नाशिक
Email : insight.nsk@gmail.com

आयएसबीएन नं. : 978-93-85361-07-4

मुखपृष्ठ व सजावट : महेश जगन्नाथ सोनवणे

अक्षरजुळवणी : नज़ाकत क्रिएशन्स, नाशिक
५, नीलसंकेत हौसिंग सोसायटी, वडाळा-पाथर्डी रोड,
विनय नगर, नाशिक - ०९. मो. : ९८२२७९१८०९

मुद्रक : कुलश्री प्रिंटर्स, नाशिक

किंमत : ₹ ६०/-

प्रस्तावना

गीत-सुमित की समीक्षा

भाषा मनुष्य को उत्तराधिकार में मिली होती है। जिससे वह अपनी परंपरा और अपने इतिहास को जीता है। लेकिन कवि इस भाषा को सामान्य आदमी की तरह नहीं जीता । वह अपनी सर्जनात्मक ऊर्जा से भाषा की जड़ता को तोड़कर उसे अधिक अर्थतान अधिक व्यापक बनाने की कोशिशे करता है । कविता की भाषा सामान्य भाषा की तरह मात्र संप्रेषण का माध्यम नहीं होती। कविता में संकेतों का विशेष महत्त्व होता है और सरलीकरण उसके लिए खतरनाक होता है। कविता की भाषा अनेकार्थक होती है। कविता में शब्दों की भीड़ से अलग करके विशिष्ट बनाकर रखा जाता है। कवि अपनी कल्पना की उड़ान में और अपने गहन अनुभवों में जो शब्द गढ़ता है, वे विशिष्ट अर्थों के बोधक हो जाते हैं और उन शब्दों को कवि जो क्रम देता है उससे एक विशिष्ट आकृति बन जाती है। इसलिए कविता विचार या भाव या अनुभव की अभिव्यक्ति मात्र नहीं है। कविता एक कलाकृति भी है और विचार–अनुभव की आकृति।

गिरीश पाटील के 'गीत–सुमित' काव्य–संग्रह की पहली कविता 'ईमानदार

कुत्ता और आदमी' है जिसमें कवि ने प्रश्नों की झड़ी लगाकर सामाजिक व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, बेईमान और भ्रष्टाचारी व्यक्ति, अराजक तत्त्ववाले व्यक्तियों का सांसद बनाना जैसे मुद्दों पर भाष्य किया है । जैसे –

''यहाँ ईमानदार आदमी फाँसी पर क्यों लटकता है?
हर गुंडा संसद मैं कैसे जाता है?''

विवेच्य काव्य–संग्रह की विशेषता यह है कि इसमें शायरी, ग़ज़ल और गीतों का सुंदर गुलदस्ता सजाया गया हैं । वह भी बड़ी नज़ाकत के साथ ।

कवि शिर्डीवाले सांईबाबा के भक्त है । उनकी भक्तिभावना साईबाबा पर लिखे तीन गीतों में दिखाई देती है।

गिरीश पाटील ने बाकायदा एक साल का उर्दू भाषा का डिप्लोमा लिया है। उनके शेरो–शायरी में, ग़ज़लों में उर्दू की तरह शराब, शबाब (सौंदर्य) और साकी (शराब पिलानेवाली) के दर्शन नहीं होते । उनका अंदाजे बयां कुछ और है। उर्दू की ग़ज़लें इन्हीं तीन लफ्जों के इर्दगीर्द घूमती हैं। विवेच्य संग्रह के कुछ नमूने दृष्टव्य हैं–

'मज़ार' – ''मेरी आरजू के कत्ल का इकरार करके सामने आना नहीं, शराफत का नकाब पहनकर।''

'ग़जल' – ''जिसके अंदाज अलग होते हैं
वे जिंदगी में बेताज होते हैं।''

'ज़नाज़ा' – ''वह मेरी वफ़ा का ज़नाज़ा जा रहा मेरी उल्फत का कफ़न पहनकर ।
देखे कोई तेरी वफ़ा की फितरत तो,
यकीन न करेगा किसी के उल्फतपर ।''

'यादें' – '' आपकी यादें मुस्करा देती हैं
बस आपकी बेवफ़ाई हमें छलती हैं।''

उपर्युक्त शेर मजार, ग़जल, जनाज़ा, यादें शीर्षक ग़जलों से लिए गए हैं। जब तक शायर के दिल को बेवफाई की चोट नहीं लगती, तब तक उसकी ग़जलों में दर्द उफनकर नहीं आ सकता । जिसे चाहा उसे शायर शायद पा नहीं सका । यह बात इन पंक्तियों में भी झलकती हैं 'तेरा शहर' से उद्‌घृत –

''पता नहीं पूछा हमने किसी से तेरा,
दिल में तेरी कोई पहचान नहीं रही।
फिर भी तलाश तुझे कर ही लेते हम,

लेकिन अब तू मेरी 'जान' नहीं रही।''

शायर खामोश रहता है। परंतु वह अपने सीने में दर्देगम छिपाए रखता है। भावनोद्रेक होने के पश्चात उसकी शायरी कागजपर उतरने के लिए बेताब हो उठती है। शायर के शब्दों में –

''आज मेरा शायर खामोश रहे
मैंने भी खामोशी का नकाब ओढ़कर दर्द दबाया है।''

'तेरी यारी–मेरी शायरी' की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं –

''बात नाजुक लेकिन चोट की गहराई यहाँ बहुत है,
अजीब फसाना, अपनी बर्बादी में किसी का आशियाना है।''

'सादगी' से – ''हैरान है हम तेरी इस सादगीपर,
बर्बाद दिल को काबिल दिल समझती है।''

'चाहत' से – ''तेरा मिलना अच्छा नहीं हम से
तू किसी और की है मेरी शामे ग़जल।''

'वर्षा' कविता में कवि का जुदाई का दर्द हमें सलता है

''वर्षा! ना देखेंगे हम तेरा रास्ता
अब चाहना महंगा, जुदाई का दुख सस्ता ।''

'बचपन' शीर्षक से चंद पंक्तियाँ ध्यानाकर्षित करती हैं।

''सब कुछ भूल आया
यही है मेरी गुजारीश
बचपन याद आए तो
पुकारोगी गिरीश गिरीश।''

'बचपन' शीर्षक कविता का आरंभ हल्के–फुल्के ढंग से हुआ है, परंतु कविता गंभीर भाव को भी यों दर्शाती है –

''तुम किनारे पर मेरा
इंतजार करोगी
लेकिन मेरी कश्ती
तब तक डूब चुकी होगी ।''

उपर्युक्त अंतिम पंक्ति में कवि ''मंझधार' शब्द का प्रयोग करता तो कविता में चार चाँद लग जाते । खैर !

'काबील न थे' शीर्षक के अंतर्गत सितम ढाती प्रेमिका की झलक यों दिखाई देती है–

''हमदर्द के अपने वालों को क्यों वास्ता देना ?
रो-रोकर उन्हें क्यों मायुसी दिखाना ?
जब सितमगरों के सीने में दिल ही न था ।''

बेजार होकर कवि जिंदगी से सवाल पूछ बैठता है-

''जिंदगी! तू मेरी सजा है या तेरी खूबसूरत जेल में हूँ।
आज़ादी दी है तुने मुझको फिर भी यहाँ अकेला क्यों हूँ?
जिंदगी! तेरे बाद आती है मौत सिर्फ एक बार।
ऐसा कौन कहता है, किसीपर मरता हूँ मैं कितनी बार।''

'दिवानगी' कविता से चंद पंक्तियाँ -

''यहाँ हम बेचैन हैं
उधर तुम बेताब हो,
जिंदगी को किस लम्हे का इंतजार है?''

'बात खुदा से' कविता में कवि ने भाग्यवादी व्यक्तियों पर इन शब्दों में व्यंग्य कसा है-

''अब तू भी मेरी कामयाबी का रिश्ता
इस झूठी तकदीर के साथ मत जोड़ना
वर्ना लोग बेवफा तकदीर के भरोसे
कोशिश करना छोड देंगे
तेरी इबादत में जिंदगी गुजार देंगे ।''

विवेच्य काव्य - संग्रह की एक विशेषता यह है कि कवि ने बंकीमचंद चटर्जी के 'वंदे मातरम् ' गीत का अनुवाद हिंदू-उर्दू तथा मराठी भाषा में किया है।

गिरीश पाटील नासिक में रहते हैं। 'नासिक तू एक ग़ज़ल हैं' कविता द्वारा कवि ने अपने शहर के प्रति अपनी भावना, कृतज्ञता ज्ञापन कीया है।

वर्तमान समय मूल्य संवर्धन का नहीं, मूल्य-विघटन का समय है। कवि वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर इन शब्दों में भाष्य करता है-

''हर कोई नुमाईंदा धमकाता हमें दिन में
अभी खुदा का वास्ता देनेवाले खुदा से भी डरते नहीं।''

वर्तमान समय किस प्रकार भयावह हो गया है यह बात 'डर लगता है दिन के उजालों से' कविता में यों दिखाई देती है।

''शान से काले कारनामे होते हैं दिनदहाड़े

लुटेरे शर्म से रातों में चेहरा अपना छिपाते नहीं।''

विवेच्य काव्य–संग्रह की अंतिम कविता पारिवारिक विघटन एवं मूल्य विघटन पर कुठाराघात करती है–

''रिश्ते भी आजकल फर्निचर की तरह,
कुछ दिन बीतने पर पुराने जैसे हो जाते हैं।
सजाया था जिसे दिवान–ए–ख़ाने में सदा,
कुछ दिन बीतनेपर कबाड़ख़ाने की तरह हो जाते हैं।

सारांश में गिरीश पाटील ने 'दो योद्धा : सावरकर और आंबेडकर' कविता द्वारा एक ओर उदात्त, त्यागवादी, समाजसुधारक जीवनमूल्यों का बखान किया है तो दूसरी तरफ आम आदमी की, बौनों की दुनिया पर शल्यचिकित्सक की तरह 'शवविच्छेदन' भी किया है। स्वार्थ का बाजार चरमसीमा पर पहुँचा है। कविता मानवीय मूल्यों का कलात्मक सृजन है। उत्तरआधुनिकता के दौर में कोई भी ऐसी बात जो सीधे जीवन मूल्य या उच्च मानवीय नैतिकता से जुड़ी हो। यह समय ही ऐसा है जहाँ हर अच्छी चीज का अंत बताया जा रहा है – चाहे वह कविता हो, जीवन के आदर्श हों, विचारधारा हों या इतिहास आज राम का नहीं रावण का बोलबाला हैं। इसलिए जीवन में से 'राम' खारिज हो गया ।

गिरीश पाटील का प्रथम हिन्दी–उर्दू काव्यसंग्रह है, जिसका स्वागत सारस्वत समाज में अवश्य होगा । कवि का भविष्य उज्ज्वल हो, सरस्वती के भंडार में काव्य–सुमन और भी कवि अर्पित करे, इस शुभकामना के साथ मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

-डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
आबासाहेब गरवारे महाविद्यालय,
कर्वे रोड, पुणे – ४११००४

मनोगत

तुम्हारे नाम

जिंदादिली का पहला नाम है – शायरी! वही अपनी पहचान होती है। आप खामोश रहते हो, फिर भी आपका हाल बयां करती है – शायरी! आप अपने दिल में कोई बात नहीं छिपा सकते । ऐसा हर्गीज नहीं होता कि, दिल में एक और जुबाँपर कुछ और । मेरी हमसफर, मेरी हमराज है – शायरी । मेरा वजूद बन चुकी है –शायरी।

मेरी शायरी का सफर, हिंदी–उर्दू काव्यों का गुलदस्ता 'गीत–सुमित' आपको पेश करते हुए मैं फख्र महसूस कर रहा हूँ। जीवन में पहला प्यार, पहली बारिश, बचपन का पहला कदम, पहले सपने बेहद अहम होते हैं । उन्हें भूलाना इतना आसान नहीं। मेरी शायरी से पहली मुलाकात सन १९८४ में हुई थी । मैं यह उम्मीद दिल में लिए हूँ कि शायरी आजतक मेरे साथ है और आखरी साँस तक रहेगी । मुझसे और मेरी शायरी से बेपनाह मोहब्बत करने वालों की कोई कमी नहीं।

मेरी मातृभाषा मराठी है। उर्दू और हिंदी भाषाएँ मेरी मौसियाँ हैं। मैंने अपनी

माँ का प्यार पाया ही है, लेकिन मुझे इन दोनों मौसियों का प्यार भी नसीब हुआ । इसलिए मैं स्वयं को बड़ा खुशनसीब समझता हूँ। मेरा बचपन देहात में गुजरा; जहाँ हमारे पड़ोस में बहुजन समाज के लोग रहते थे । जिनमें परमेश्वर बंग (मारवाडी) खिमजीभाई, ठक्कर (गुजराती) लल्लन मिश्रा, बाबू मिश्रा, कनौजी (ब्राह्मण) शफीशेठ बागवान एवं सलीम रंगरेज (मुस्लीम) इनके अलावा काशीनाथ महाले, सदाशिव वारुळे, सोनजी गुजर, डी. एस. निकम, राजपूत चौधरी भी इनमें थे। इन सभी पड़ोसियों के बीच मेरा बचपन बीता । इसका लाभ यह हुआ कि मैं उनकी भाषा बोलने लगा । मेरे असापास अमन–चैन का माहौल खुशबू–सा महकसा था । उस वक्त नफ़रत का ज़हर ज्ञात नहीं था ।

मुझे जब–जब जख्में मिली तब–तब मुझे हिंदी–उर्दू ने उन्हें कागजपर उतारने के लिए मजबूर किया। मेरे विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने की भाषाही हिंदी और उर्दू है। मुझे हिंदी फिल्में देखने का काफी शौक था । यह भी एक वजह बनी कि मुझे बयाँ होने के लिए मराठी से ज्यादा हिंदी भाषा नजदिक लगी । ये रिश्ता आज भी बरकरार है। प्यार दूरियाँ पनपने नहीं देता । मेरे लिए मराठी–हिंदी का प्यार कुदरत से कम नहीं।

हमारे कालेज में 'अंकुर' नामक सालाना पत्रिका प्रकाशित होती थी । उसमें हिंदी – मराठी भाषा में कविताएँ छपती थी । मैं दोनों भाषाओं में कविता लिखता था, जो 'अंकुर' में छपती । मैं बी.ए. में पढ़ रहा था तब हिंदी–मराठी वैकल्पिक भाषाएँ थी, जिसमें केवल एक भाषा का चयन करना मेरे लिए बेहद मुश्किल था। क्योंकि मेरी दोनो भाषाओं में रुचि थी, लगाव थी, प्यार था । उस समय मैं एकमात्र छात्र था, जो दोनो भाषाओं का अध्ययन करना चाहता था । मेरी कश्मकश प्राचार्य डॉ. बी. डी. बोरकर तक पहुँची। उन्होंने मुझे बड़े प्यार से समझाते हुए कहा, कि ये दोनो भाषाएँ वैकल्पिक हैं । जिनकी तासिकाएँ एकही समय में होती हैं। तेरे लिए नई समयसारिणी बनाना संभव नहीं। तुम एक समय में केवल एक भाषा की तासिका में बैठ सकते हो। यह तुम पर निर्भर रहेगा कि किस कक्षा में बैंठना है? उस समय प्रा. डॉ. लिला दंडवते मराठी और प्रा. अडावदकर हिंदी पढ़ाती थी । मराठी के पाठ्यक्रम में गो. नी. दांडेकर लिखित 'पवना काठचा धोंडी' उपन्यास का समावेश था । मैंने इस किताब की पढ़ाई घरपरही की और हिंदी की कक्षा में नियमितरुप से बैठने लगा। फल स्वरूप हिंदी की तुलना में मराठी का अध्ययन कम हुआ। जब लिखने का मौका आता तब मराठी के बजाए हिंदी शब्द नजदिकी लगने लगे। दूसरी बात यह है कि दोनों

भाषाओं का व्याकरण भिन्न है। मराठी भाषा के अध्ययन में वृद्धी करने के पश्चातही मैं मराठी में लिख पाया । हिंदी का प्यार आजभी बरकरार होने से मैं आपको 'गीत–सुमित' का गुलदस्ता सौंपने में कामयाब हुआ।

मैं हिंदी और मराठी में गीत लिखता हूँ। इस काव्यसंग्रह में शिर्डी के सांईबाबा पर लिखे गीत का समावेश किया है। मैंने सभी प्रकार के गीत लिखे हैं। परंतु किन्हीं कारणों से वे छप नहीं पाए। मैंने नासिक के नेशनल उर्दू हायस्कूल से उर्दू भाषा का एक साल का डिप्लोमा भी किया है। मुझे शेख सर पढ़ाते थे । उस समय मेरा उर्दू का प्यार परवान पर था, आज भी है। मुझे गालीब, शकील बदायुनी, मीर, हसरत जयपुरी से लेकर गुलजार तक की शायरीने दिवाना बनाया। उर्दू का अध्ययन करने के पश्चात मैंने मराठी में अनूदित 'वंदे मातरम्' गीत का हिंदी – उर्दू में अनुवाद किया । मेरा प्रयास यह था कि भाषा की सरहदें किसी रचना को बाधा न पहुँचाएँ। देश के प्रति प्यार की खुशबू हर भाषा में महकनी चाहिए। मैंने इस संग्रह में हिंदी और उर्दू भाषा में अनूदित 'वंदे मातरम्' का समावेश किया है। क्योंकि देश की मिट्टी के खातिर मरमिटनेवालों की कोई कमी नहीं है। मेरा मजहब, मेरा वतन और मेरे देश की मिट्टी है। देश की हर भाषा का मैं सम्मान करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि मेरी हिंदी कविताएँ और उर्दू ग़जलों को पढ़कर आप अपने वतन की खुशबू से सराबोर हो जाओगे। काव्य सृजन करते समय मैंने एक यात्रा की थी । अब आप जब इस काव्य–संग्रह को पढ़ेंगे तब आप भी मेरे सहयात्री होकर उसका लुफ्त उठा पाओगे।

'गीत–सुमित' में मेरी दिवानगी से मेरी फ़ना होने तक की कहानी बयाँ की है। मेरी हिंदी–उर्दू शायरी का प्यार पटवे सर, शेख सर, स्वर्गीय प्रा. डॉ. वासुदेव सोनवणे, प्रा. अडावदकर मैडम ने परमसीमा तक पहुँचाया । मुझसे ज्यादा मेरी शायरी पर बेपनाह मोहब्बत करनेवाले दोस्त स्वर्गीय दशरथ लोहार, प्रा. प्रसन्न सोनवणे, आर. डी. पवार, सलीम रंगरेज, लियाकत पठाण का जिक्र किए बिना मैं आगे नहीं बढ़ सकता। मेरे साथ उनका प्यार हमेशा है और हमेश रहेगा । लेकिन मैं सभी दोस्त और सहेलियों के नामों का जिक्र नहीं कर सकता । कुछ गुमनाम हैं, उन्हें गुमनाम ही रहने दें। मुझे इस बात का फख्र है, कि मेरे मित्र और मेरी सहेलियों के लड़के–लड़कियाँ मेरी शायरी पर नुक्ताचीनी करना आज भी नहीं भूले। इसलिए मैंने इस काव्यसंग्रहरुपी गुलदस्ते का नामकरण किया है – 'गीत–सुमित।'

- गिरीश पाटील

अनुक्रमणिका

ईमानदार कुत्ता और आदमी १
जनाजा..... २
यादें ३
तेरा शहर ४
बेवफ़ा ५
तेरी यारी–मेरी शायरी ६
शेरो शायरी ७
सादगी ११
जिसके अंदाज अलग होते हैं ११
वर्षा १२
चाहत १३
बचपन की याद १४
न जाने कैंसे? १४
काबील न थे.....१५
जिंदगी ..! १६
ग़ज़ल १७
फासले १७
हँसते हैं हम मुझपर मरनेवालों पर १८
मेरे दिल के किसी कोने में १९
मजार २०
जिंदगी अजनबी बन गई जबसे २०
खामोशी २१
एक लम्हा दोस्ती का.....२२
दिवानगी.....२२
बात खुदा से..... .....२३
डर लगता हैं दिन के उजालों से २४
खामोशी २५
रुसवाई २६
शर्मिली २६
ना मिलना ना मीलिए २७
नज़र चुराकर निकल जाना २७
नासिक तू एक ग़ज़ल हैं २८
दो योद्धा : सावरकर और आंबेडकर..२९
मैं एक आम का पेड़ हूँ ३०
जिंदगी अजनबी बन गई जबसे ३१
मौसम वही....कश्ती वही हैं ३२
वंदे मातरम् ३३
वंदे मातरम् (मराठी अनुवाद).....३४
माँ तुझे सलाम (हिंदी–उर्दू अनुवाद)..३५
सांईबाबा तेरी शिर्डी मेरा चारोधाम....३६
सांई मेरा मौला ३७
भर दो मेरी झोली ३८
सांई तेरा नामही बिगड़े बना दे काम ..३९
सांई का संदेश ४०
सांई तुझ में देखता हूँ ४१
सांई तेरे ग्यारह वचन ४२
चलो चले साई के चेले शिर्डी चले ...४४
साई के दीवाने ४५
वह बात कुछ ओर थी.....४६
शायरी ४७
शायरी ४८
लाख उम्मीदे सजाकर ४९
मैं आजकल खामोशही रहता हूँ.....५०
रिश्ते भी आजकल फर्निचर की तरह..५१
कौन कहता हैं हम मजबुर होते हैं ५२

रूबरू

नाम : गिरीश चतरु पाटील

भ्रमणभाष : ९९२२५९१२५९

ई-मेल : gcpatil1722@gmail.com

वेबसाईट : www.gcpatil1722.webs.com

शिक्षा : एम. ए. (राज्यशास्त्र), एम. ए. (इतिहास)
बी. एड्., एम.सी.जे. (मास कम्युनिकेशन ऑफ जर्नलिझम)
डी.एल.यू. (डिप्लोमा इन उर्दू लॅग्वेज)
साहित्यभूषण (कुसुमाग्रज प्रतिष्ठान)

साहित्यसेवा : स्मृतींचा झंझावात (मराठी काव्यसंग्रह)
सुगीचे दिवस (मराठी काव्यसंग्रह)
बापाचा सात-बारा (मराठी काव्यसंग्रह)
इंद्रधनुष्य (हिंदी-मराठी प्रातिनिधिक काव्यसंग्रह)
प्रेमसागर, कोहिनूर (प्रातिनिधिक काव्यसंग्रह)

कार्यकक्षाये : संचालक, अक्षरसंवाद फिचर्स अॅन्ड सर्व्हिसेस
व्याख्याता, बहि:शाल शिक्षण मंडळ, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ
समंत्रक, वृत्तपत्रविद्या विभाग, य.च.म.मुक्त विद्यापीठ, नाशिक
राज्याध्यक्ष, समाज प्रबोधन संस्था
सदस्य, महाराष्ट्र साहित्य परिषद, पुणे

सम्मान :
- उत्कृष्ठ ललित लेखक पुरस्कार-२०१७ (सहस्त्रबाहू दिवाळी अंक)
- राज्यस्तरीय काव्यलेखन पुरस्कार-२०१६
  (शहिद गोविंद पानसरे समता संघर्ष समिती, कोल्हापूर)
- सर्वोत्कृष्ठ ग्रामीण काव्यसंग्रह-२०१५
  (युवक विकास प्रतिष्ठान, जळगाव)
- राज्यस्तरीय गुर्रुब्रह्म पुरस्कार - २०१२
  (आनंद कल्याणकारी सामाजिक संस्था, डोंबिवली)
- साहित्य ज्योत पुरस्कार-१९९७ (समाज विकास केंद्र, लातूर)

ईमानदार कुत्ता और आदमी

आदमी ईमानदार होनेसे डरता हैं
कुत्ते की मौत से हिचकिचाता हैं।
कुत्ता ईमानदार होता हैं,
मरना इसका बेमौत क्यों कहलाता हैं ?
यहाँ ईमानदार आदमी
फाँसीपे क्यों लटकता हैं?
आदमी ईमानदार होने से डरता हैं।
कुत्ते का अंजाम देखकर दिल में सिसकता हैं।

कुत्ता वफादारी का आदर्श, (होकर भी)
कुत्ता नाम गाली क्यों बनता हैं?
पागल समझकर राष्ट्रपुरुषों को,
कुत्ते जैसा क्यों मार दिया जाता हैं?
आदमी ईमानदार होने से डरता हैं
बेईमानों की तरक्की देखकर रोता हैं।
भूखे मरते वतन के रखवाले,
हर गुंडा संसद में कैसे जाता हैं?
कुत्ता मालिक की सुरक्षा करता,
टुकड़ों के लिए क्यों तरसता हैं ?
आदमी ईमानदार होने से डरता हैं?
अदालत के फैसले सुनकर अपना फैसला बदलता हैं।

'ईमानदार' कुत्ता और आदमी,
दोनों से कालाबाजार वाले डरते हैं
कुत्ते को जंजीर और ईमानदार आदमी को,
आदर्श रिवाजों में क्यों बांधते हैं?
आदमी ईनामदार होने से डरता हैं।

जनाजा

वो मेरी वफा का जनाजा जा रहा
मेरी उल्फत का कफन पहनकर।

शराफत तक ने मुँह फेर लिया जनाजे से,
वफा की तेरी लाश को देखकर।

लाशपर से झूठे वादों के वह धब्बे,
गमे आसुओं से साफ किए धोकर।

जो कदम तेरी डगर से जाते थे,
मोड़ लिए मैंने आज मैखाने की ओर ।

देखे कोई तेरी वफा की फितरत तो,
यकीन न करेगा किसी की उल्फतपर।

यादें

आपसे समझदार आपकी यादें हैं,
जो हरपल मेरे साथ होती हैं।

आपकी यादे मुस्करा देती हैं,
बस तेरी बेवफाई हमे छलती हैं।

आपसे समझदार आपकी यादें हैं,
जब खफ़ा हो तो बाहो मैं पनहा देती हैं।

खुशीयों में दूर, गम में साथ– साथ,
आपको अच्छी सच्ची दोस्ती निभाती हैं।

तेरा शहर

तेरे शहर से गुजरे अजनबी बनकर,
सबकुछ अपने जगहपर, सिर्फ तुझे छोड़कर।

पता नहीं पूछा हम ने किसीसे तेरा,
दिल में तेरी कोई पहचान नहीं रही।

फिरभी तलाश तुझे करही लेते हम,
लेकिन अब तू मेरी 'जान' नहीं रही।

अपना चेहरा बदलने के साथही
नया नाम भी अपना रख लिया होगा।

बसाकर एक और नया आशियाना,
पता हैं मेरे अतीत को भूला दिया होगा।

तेरा ठिकाना किसीके दिल में हैं,
तेरा मुस्कराना किसी के मैफील में हैं।

तेरे शहर से यूँ लौटे आज हम
लौटता हो किसी के मजार से।

बेवफ़ा

वो अब हमसे निगाहे चुरा लेते हैं,
जो निगाहो में मेरे सपने सजाते थे।

हमारा नाम तक नहीं अब उनकी जुबान पर,
जो मेरे गीत मैफील में गाते थे।

ओरों के साथ गुजार रहे जिंदगी,
जो मेरी जुदाई में परेशान होते थे।

अब तो पहचान देना भी भूल गये,
जो मेरे हमसफर बनना चाहते थे।

प्यार कुछ ऐसी बुरी चीज हैं,
बन जाते दुश्मन जो धडकन बनते थे।

तेरी यारी-मेरी शायरी

आपका खूनसे भरा हुआ दिल का टुकड़ा हमे मिल गया हैं।
दिल के बदले दिल देकर मोहब्बत का सिलसिला शुरू किया हैं।

आज तेरी किस्मत ने तुझे किसी की दुल्हन बना दिया।
खुदा ने तो किसी के जान को गैरो के दिल में बसा दिया।

बात नाजुक लेकिन चोट की गहराई यहाँ बहुत हैं।
अजीब फसाना, अपनी बर्बादी में किसी का आशियाना हैं।

आपके जुदाई का गम हमे हरगीज नहीं।
पता नहीं आज ये दिल बस में क्यों नहीं।

बडी मुश्किलोंसे भूलाए थे हमने उनके सितम
क्यों याद दिलाते हो मेरे सपनो पे हुआ मातम।

शेरो शायरी

१. दोस्ती में हमेशा देखा गया वक्त का अंजाम यही होता हैं
जख्म देते हैं दुश्मन दोस्तों पर ही इल्जाम लगा होता हैं।

२. तेरा रुसवा तेरा शिकवा पुछता हूँ इसमें क्या दम हैं?
भूला न सकी नगमें मेरे ये क्या कम हैं?

३. हम इतने भी तेरे लिए गैर न थे, तेरी मैफील में आने के काबील तो थे
हमें बुलाया नहीं तेरी मैफील में, दोस्तों के बगैर क्या वहाँ कातील थे?

४. अच्छा हुआ इस मौके पर तेरी दोस्ती का इम्तहान तो हो गया
हर वक्त मुझपर तेरा दोस्ती जताना इस बात का फैसला तो हो गया।

५. हमसे खेला ये खेल अब किसी के साथ खेलना नहीं
जालीम लोग हैं इस दुनिया के बदला लेते हैं यह भूलना नहीं।

६. शायरी अगर शायर से न मिले
ग़ज़ल का दम कहीं निकल न जाए

तुम दुनिया का खयाल करती रहो
शायर के खयाल कहीं बदल न जाए ।

७. आग दोनों तरफ बराबर लगी रहे
तो जलने का दर्द भी हसीन लगता हैं

जलते हैं जब साथ साथ मैफील में
तो शम्मा के साथ परवाना भी कुर्बान होता हैं ।

८. कौन कहता हैं वह मेरी ग़जल पढ़ती नहीं
पढती हैं, लेकिन वह जज्बा समझती नहीं

कौन कहता हैं वह कभी हंसती नहीं
जख्म और दर्द के नगमे बिना हंसे पढ़ती नहीं ।

९. एक एहसान मुझपर करना
मेरे नगमों को तेरे दिल में ही संजोए रखना

सुनाना नहीं किसी के मैफील में
तुझे पता नहीं क्या सोचेगा जमाना ।

१०. तेरा वादा तेरी दोस्ती झूठी सही
कुछ पल के लिए दिल बहल तो गया।

दोस्ती झूठी हो नहीं सकती
यह भरम मेरे दिल से निकल तो गया।

११. गलत चीज़ को गलत जगहपर
रखने का अंजाम क्या होता हैं

तुझे मेरे सिने में रखकर, जगह देकर
इस सवाल का जबाब तो मिलता हैं।

१२. वक्त का अजीब खेल होता हैं
तेरे साथ सात फेरे लिए जा रहे थे।

उस वक्त दवाखाने में हकीम
मेरे जख्मों के टाँके सीए जा रहे थे।

१३. माना की तेरा वजूद सही
तेरी मर्यादा बन गया हैं।

क्या तुझे पता नहीं
मेरा वजूद खोकर तुझे पाया हैं।

१४. तेरा सिंदुर तेरा प्यार
तू ही बता कौनसा उधार.

जियो तो किसी के साथ
ये उलझन क्यों बारबार।

१५. सितम जब चाहे वे करते हैं
हम तो सिर्फ सहते चले हैं।

बयान में उनके वह जादू हैं
पलभर में मना लेते हैं।

१६. कबतक हम यूँही
नशा तुझसे लेते रहे साकी
जख्मों को भूलाने के लिए
कब तक नए जख्मों को
सँजोते रहे साकी।

१७. होश आता जब कभी मुझे
लगता हैं तुम पास नहीं हो

बहता हैं जख्म सीने से
ग़ज़ल का एहसास नहीं हो

१८. गैरोकी जागीर हो तुम
फिर भी क्यों अपनी लगती हो?

बसी हो किसी आँगन में
मेरे खयालों में क्यों रहती हो?

१९. छिपाने से नहीं छिपती,
बेपनाह चाहत तेरी।

नज़रों से बयाँ हो जाती,
दिल की हर बात तेरी।

२०. खामोश तुम रहती हो
ये पुरानी आदत तेरी,

फिर भी खामोशी तेरी,
बयाँ करती दिले हालत तेरी।

२१. आजकल आप मिलते हो ऐसे,
जैसे कोई अजनबी से मिलता हैं।

हम से बातें करते हो ऐसे,
जैसे कोई डर आप को सताता हैं।

२२. पल दो पल के लिए मिलते हो,
तनहाई में अकेले छोड़ जाते हो।

यादों में आपके हम जागते हैं,
सोये तो सपनो में भी कहाँ मिलते हो?

२३. वक्त नहीं मिलता आपको
हमारा बेहाल पूछने के लिए

आप जी रहे किस गुलशन में
जहाँ जगह नहीं मेरी खूशबू के लिए।

२४. आज आपका मुझे याद न कराना
ये बेरूखी हैं या शरारत हैं?

फिर भी आपको हम याद करते
हमारी नादानी हैं या शराफत हैं।

२५. आज मिलकर भी लगता नहीं
आप हमसे मिले हो दिल से

जुदा होकर भी लगता नहीं
आप जा रहे हो मेरे चमन से।

१५. ईल्जाम उन पर इतने हैं
फिर भी वह मुजरीम
नहीं कहलाते हैं।

सादगी

हैरान हैं हम तेरी इस सादगीपर,
बर्बाद दिल को काबील दिल समझती हैं।

हम तेरी निगाहो में अजनबी,
फिर भी नजरे मिलने की गलती करलेती हैं।

नजरों में बसने वाले तोड़ते हैं सपने ।
कभी कभी नजरे भी हमसे फेर लेते हैं।

ये प्यार ही कुछ ऐसी चीज हैं,
धडकन बनने वाले ही दुश्मन बन जाते हैं।

जिसके अंदाज अलग होते हैं

जिसके अंदाज अलग होते हैं,
वे जिंदगी में बेताज होते हैं।

संभालते सीने में ओरों के गम,
वे किसी के हमराज होते हैं।

गम को गीतों में सँवारते हैं,
वे मैफील का आवाज होते हैं।

औरोंपर खुशियाँ लुटा देते,
वे अवाम 'राज' होते हैं।

ना दोस्ती और प्यार जानते,
वे औरों के दिल में बसते हैं।

वर्षा

वसुंधरा को भी तो हैं तेरी आस,
क्योंकि उसे भी तो हैं प्यास

शिपी बैठ हैं मुख फैलाए
क्योंकि वे बूंद से मोती पाए।

अब जहाँ भी देखे तेरी राह
आनंद की हैं उन्हें भी आह।

वसुंधरा पाए तुझसे तृप्ती
और सीपी में बूंद से मोती।

जहाँ हो आशीयाना, लेकिन
तू बरस के भी प्यासा रहा ये अंजाना।

वर्षा! ना देखेंगे हम तेरा रास्ता
अब चाहना महंगा, जुदाई का दुख सस्ता।

चाहत

बरसो हो गए तुमसे जुदा होकर,
फिर भी कैसी ये मेरी चाहत हैं?

कैंसे बयाँ करू मैं अपनी जुबाँ से
आज भी क्या मेरी ये हालत हैं ?

डर लगता हैं कहीं मेरी आशीकी,
जिंदा न हो जाए आज फिर से।

यूँ लौटे हम आज तेरे कुँचे से,
अपना सबकुछ छोडकर निकले शहर से।

बहारे भी बीत गई हैं मिलने की,
जमाना भी बदल गया हैं आजकल।

तेरा मिलना अच्छा नहीं हमसे,
तू किसी ओर की हैं, मेरी शामे ग़ज़ल।

बचपन की याद

जवानी में याद आया,
अफसाना बचपन तेरा
जख्म हैं पुराना लेकिन
आज भी तो वह हैं हरा।

सदियों से भी यह जख्म
नहीं मिट पाएगा।
जुदाई का नमक हो
तो जख्म कैंसे मिट जायेगा ?

शुक्र हैं तुम्हें कुछ भी
नहीं आता बचपना याद।
हमें आता हैं याद,
इसलिए हम ही हो रहे बर्बाद।

सब कुछ भूल आया
यही हैं मेरी गुजारीश।
बचपना याद आए तो
पुकारोगी गिरीश गिरीश।

तुम किनारे पर मेरा
इंतजार करोगी।
लेकिन मेरी कश्ती
तब तब डूब चुकी होगी।

न जाने कैंसे ?

हम दोनों में अजीब से फासले हैं।
जीतना करीब आते हैं,
उतने बढते हैं ये फासले।

तेरे जाने के बाद,
तन्हाई में ओर भी बढते हैं फासले
जितना तुझे पाने की
कोशिश करूँ, उतनीही मंजील
दूर लगती हैं।

भूलने की तुझे,
कोशिश करता हूँ तो
उतनी ज्यादा याद तुम आती हो।

सूरज और शमा के
दरम्यान का यह फासला हैं
सूरज डूबने पर,
शमा की जिंदगी शुरू होती हैं।
तो शमा जलने के बाद
सुबह सूरज निकलता हैं।

न जाने कैसे बाट पाएँगे ये
दो जिंदगी के दरम्यान के फासले,
तेरे और मेरे बीच के।

काबील न थे....

तकदीर से क्यों शिकायत करे?
अपने खुदा से क्यो इबादत करे ?
हम ही खुशियों के उस वक्त काबील न थे

अपनी दर्दे गजल अधूरी क्यों छोड दे ?
थामा हुआ ज़हर का जाम क्यों तोड दे?
माना कि अपने हमदर्द मैफील में न थे।

रास्ते अपने क्यों बदल लेने चाहिए?
उसुलों को अपने क्यों भूल जाना चाहिए?
जब राही अपने साथ मंज़िल तक न थे।

बिना कसुर ही क्यों सजा काटना?
बेबसी में अपनी क्यों घुट के मरना?
चिख चिखकर बता दें हम वफा के कातील न थे।

हमदर्द के अपने वालों को क्यों वास्ता देना?
रो– रोकर उन्हे क्यों मायुसी दिखाना ?
जब सितमगरो के सीने में दिल ही न थे।

जिंदगी ..!

जिंदगी ! कभी मैं बात करता हूँ तुझको अपनी समझकर।
कभी तू भी बात कर लिया कर मुझसे अपना समझकर ।।

जिंदगी ! दिन कट जाते हैं लेकिन कटती नहीं हैं रात।
हर रातों को सोचता हूँ मैं क्या क्या करू तुझसे बात ।।

जिंदगी ! तू मेरी सजा हैं या तेरी खुबसूरत जेलमें मै कैद हूँ।
आज़ादी दी हैं तुने मुझको फिरभी यहा अकेला क्यों हूँ?

जिंदगी ! कभी तू ख्वाब लगती हैं कभी हकिकत ।
ये तेरा प्यार हैं मुझसे या नई कोई हसीन शरारत ।।

जिंदगी ! कभी कभी तू भी ना मेरे साथ मजाक कर लेती हैं।
मजाक करने वाला नसीब तो पराया होता हैं तू अपनी होती हैं।।

जिंदगी ! सोचता हूँ क्या ये भी कोई जिदगी हैं।
ना कोई हमसफर हैं, ना किसिको हमसे दिल्लगी हैं।।

जिंदगी ! बस इतना बता दे कहा तक साथ चलना हैं।
मिला हैं जिनसे प्यार मुझे उनसे बिदाई भी तो लेनी हैं।।

जिंदगी ! बात करता हूँ तुझसे ये मेरा प्यार मत समझ लेना ।
सफर में मुझको एक दिन तुझे छोड़कर पड़ेगा मौतको गले लगाना ।।

जिंदगी ! तेरे बाद आती हैं मौत सिर्फ एक बार ।
ऐसा कौन कहता हैं, किसीपर मरता हूँ मैं कितनी बार ।।

ग़ज़ल

मिटा रहे हम खुद अपनी ही हस्ती को
क्यों मेरी तबीयत तुम पूछते हो।

जल रहे हम गम में जलने ही दो
क्यों परवाने को जिंदगी की दुवाएँ देते हो।

देखा हैं हमने भी तेरी जालीम दुनिया को
क्यो वफा की तसल्ली से हमे तुम भुलाते हो।

तेरी दुनिया वालों ने दिए मुझे जख्म–ए–नासुर
फिर भी इस दुनिया में रहने को कहते हो।

मर जाएँगे तुम हमारे बगैर
ऐसी तो कोई बात नहीं, फिर क्यों रोते हो ।

मुबारक हो तुझको तेरी यह मैफील
जाने दो मुझे मैखाने में क्यों मुझे रोकते हो।

फासले

पता नहीं हम दोनों के,
मोहब्बत का
अजीबसा किस्सा हैं।

जब मेरे पास तुम होती हो
फिर भी हमारे बीच में
फासलें बढ़ने लगते हैं।

जब मेरे पास नहीं होती हो
फिर क्यूं मेरे बहुत करीबसी लगती हो।

हँसते हैं हम मुझपर मरनेवालों पर

हँसते हैं हम मुझ पर मरने वालों पर
जिन्हें पता तक नहीं हम क्या हैं ?

तस्वीर पर मेरे बेचैन हैं वह
हमें खुद पता नहीं माजरा क्या हैं?

मेरे नाम के साथ बदनाम हो गए
उन्होनें सोचा तक नहीं अंजाम क्या हैं?

हँसते हैं हम, मुझपर...जिन्हें पता तक नहीं....

जिन्हें मिला मेरे नाम का साथ
उन्होंने पहचाना नहीं हम क्या हैं?

मेरे वादों पर मुकर गए वो,
ये तक सोचा नहीं, मेरी तबीयत क्या हैं?

हँसते हैं हम, मुझपर...जिन्हें पता तक नहीं.....

सोचते हैं हम ''दोनो'' के बारे में
आखिर किस्मत का इरादा क्या हैं?

ना उनपर भरोसा ना इनपर यकीन,
सोचता हूँ मैं ये हालात क्या हैं।

हँसते हैं हम, मुझपर ....जिन्हें पता तक नहीं....

बुरे वक्त पर ना '''ये'' रहेंगे ना ''वो''
फिर भी अजीबसा मजाक क्या हैं?

तुम ही बता दो हमें मसिहा ये
जो बीत रही मुझपर ये बला क्या हैं?

हँसते हैं हम, मुझ पर...जिन्हें पता तक नहीं...

मेरे दिल के किसी कोने में

मेरे दिल के किसी कोने में,
'शायर' आज फिर से जिंदा हुआ हैं।

फिर उठी हैं कलम मेरी,
जिसे आँसुओ में मैंने भिगोया हैं।

लिखी जाएगी एक दास्ताँ और,
मैंने क्या क्या अब तक खोया हैं।

मेरे शायर को जिंदा करने वाले,
तुम्हे पता नहीं क्या क्या सितम मैंने ढोये हैं।

सीने में जख्मों को सँभालकर भी,
कातील का अच्छा ख्याल मैंने किया हैं।

आज मेरा शायर खामोश रहे,
मैंने भी खामोशी का नकाब ओढकर दर्द दबाया हैं।

मजार

अब आई हो मेरी वफा के मजारपर,
तू मेरे सच्चे प्यार की तौहीन ना कर।

मेरी आरजू के कत्ल का इकरार करके,
सामने आना नहीं शराफत का नकाब पहनकर।

तेरे दो आँसुओंपर न आएगा रहम,
कभी याद में तेरी दरियाँ बहाया रो– रोकर।

कैंसे यकीं करू तेरी जफा की तौबापर
आयी भी तो सिंदुर किसीके नाम के भरकर।

जिंदगी अजनबी बन गई जबसे

हर पल मुझे इम्तहान लगता हैं।
तन्हाई लिपट गई सीने सें

दो पल का फासला भी दूर लगता हैं।
दो पल शब को रातों का डर लगता हैं?

गीत गुनगुनाता हूँ अपनी खुशी से
कभी मायुसी का खौफ नहीं लगता हैं।

चलता हूँ मैं अपने ख्वाबों के रास्ते से
टूट जाए सपने ऐसा भी नहीं लगता हैं।

खामोशी

बेचैनी होती हैं हमे आज भी,
जब याद तुम्हारी सताती हैं।

मेरे दिल के किसी कोने में
अजनबी खामोशी छा जाती हैं।

अतीत के बारे में सोचने को,
मुझे मजबूर कर देती हैं।

अतीत में हम खुश थे,
जिंदगी डरावने सपनोंसी नहीं लगती थी।

माना कि झूठी कहानी थी,
आज की सच्चाई से तो अच्छी लगती थी।

आज तेरी यादों के सामने,
हालात मेरी ऐसी क्यों शरमाती हैं।

पता नहीं मुझको आज,
खुशी मेरी हंसी के पीछे क्यों सिसकती हैं?

दिवानगी

ना रातोंको नींद हैं
ना दिल को करार हैं
ये कौनसा दिवानगी का खुमार हैं?

यहाँ हम बैचेन हैं
उधर तुम बेताब हो,
जिंदगी को किस लम्हें का इंतजार हैं?

ना तुम भूल सके हो
ना हम भूला पाए हैं
आज यह कौनसा यादों का दौर हैं?

तन्हाई का अहसास हैं,
फासले कम हो रहे हैं
कौन किससे मिलने को बेकरार हैं?

ना तुम कुछ समझ सके
ना हम पहचान सके
ये दोस्ती हैं या बेनाम प्यार हैं?

एक लम्हा दोस्ती का...

एक लम्हा दोस्ती का,
मेरी जिंदगी के मायने बदल गया।

पूछो मत दुनिया वालों,
मुझे न जाने क्या-क्या दे गया।

यकीन न था मुझे
पलभर में अजिज दोस्त बन गया।

बुझे हुए अरमानोकी
नई उम्मीदे सीने में आज जगा गया।

कल तक अजनबी था,
आज हाथ थामकर कहीं ओर ले गया।

भरोसे का माहौल नहीं,
मेरी बाहों में सर उसका रख दे गया ।

एक लम्हा दोस्ती का
नापाक दोस्ती की जिम्मेदारी सौंप गया।

बात खुदा से.....

मैंने कहा मेरे खुदा से
मुझे मिली हुई ये कामयाबी
ये सब तेरी वजह से हैं
तेराही सबकुछ हैं

खुदा ने मुझसे झल्लाकर कहा
''ये कामयाबी तेरी मेहनत
तेरी लगन, तेरी कोशीश
इन सबका नतीजा हैं।''

इसे तू मेरे नामपर मत थोपना
वरना कोशिश करने वाले
मेहनत और लगन सब छोड देंगे
थोड़ी देर के बाद खुदा ने

मुझे प्यारसे समझाया,
''कामयाबी का तेरी तकदीर से भी रिश्ता हैं
उसे भी तो थोडा बहुत हक हैं''
फिर मैंने खुदा से झल्लाकर कहीं

''ऐ खुदा तकदीर मेरे साथ हैं
लेकिन वो मेरी कहाँ हैं?
अब तू भी मेरी कामयाबी का रिश्ता
इस झूठी तकदीर के साथ मत जोड़ना।

वर्ना लोग बेवफा तकदीर के भरोसे
कोशिश करना छोड़ देंगे
तेरी इबादत में जिंदगी गुजार देंगे
क्या तू ये चाहता हैं?
या हम दोनों के बीच...
छा गया खामोशी का लम्हा !

डर लगता हैं दिन के उजालों से

आज हम डरते हैं दिन के उजालों से
रातों के अंधेरों से अब हम जरा भी डरते नहीं

डकैती और कत्ले होते हैं दिनदहाड़े
रातों के अंधरों में मुजरीम गुनाह करतें नहीं

शान से काले कारनामे होते हैं दिनदहाड़े
लुटेरे शर्म से रातो में चेहरा अपना छिपाते नहीं

डर लगता हैं दिन में सच बात करने को
खत्म करते हैं आवाज जरा भी हिचकीचाते नहीं

हर कोई नुमाईंदा धमकाता हमे दिन में
अभी खुदा का वास्ता देनेवाले खुदा से भी डरते नहीं

हर कोई तुला हैं सुरज पर शायरी करने पर
चाँद से बात करने के लिए हमारे पास हसीन रातें शेष नहीं

ख्वामोशी

तेरी खातीर हम खामोश थे
लोग हमपर क्या क्या इल्जाम लगाते गए

जुबाँ पर लिया नहीं तेरा नाम
फिर भी भरी मैफील में बदनाम होते गए

सीने में छिपाये थे सारे राज तेरे
वो राज गैर मेरे पास बयाँ करते गए

उठाया जिस जिस गैरो पे मैंने हाथ
बदकिस्मती से तेरे दोस्त वो निकलते गए

छिपा न सकी तू कोई बात गैरो से
मेरे जज्बात हरबार निलाम होते गए

फिर भी हम खामोश ही थे हरबार
तेरे खामोश होंठ गुनाहों के सबूत देते गए

रुसवाई

हमेशा हम तेरी मैफील में
हालात अपनी बयाँ करते गए

मुलाकातों के सिलसिलों में
दिल की हर बात बताते गए

पूछते जब आप दास्ताँ मेरी
हमेशा हम हँसकर
टालते गए

छिपाकर अपने जख्मोंको हम
हँसकर तुम्हारे हालात पूछते गए

सुनाते रहे ग़ज़ल रातभर हम
आप बताए बगैर ही चले गए

आपकी इस रुसवाई से
हम हर जख्म सिने में संजोते गए

शर्मिली

बडी मुद्दतों के बाद
एक शर्मिली मुझे मिली थी
उम्र से नादान
खयालो से भोलीभाली थी

क्या तारिफ करूँ
सबसे वह निराली थी

मेरी दोस्त बन गई
दिल से थोडी मनचली थी

आँख खोलकर देखा तो
मेरी जेंब का पाकीट खाली था

दोस्तों ने बाद में बताया
तेरी शर्मिली चालू मवाली थी।

ना मिलना ना मीलिए

ना मिलना ना मीलिए
झूठे वादों का सहारा लेना छोड़ दीजिए

जा रही हम से मिलने
यह बहाना लोगों से कहना छोड़ दीजिए

तेरा इंतजार अब कहाँ
झूठी शिकायतें करना अब छोड़ दीजिए

ना बेकरारी ना बेताबी
आलम दोस्ती का रखना छोड़ दीजिए

तोड चुके हो सब रस्मों कों
झूठा रिश्ता निभाना भी छोड़ दीजिए

नज़र चुराकर निकल जाना

नज़र चुराकर निकल जाना
ऐसी भी क्या तेरी मजबुरी

इरादे अगर तेरे नापाक
मुझसे मिलने कि क्या चोरी

ना हम खफा हैं ना तुम
पता नहीं क्यों ऐसी ये दुरी

तुम बैठे अजनबी बनकर
मुझ में ही क्यों ऐसी बेकरारी है?

बेकरार होना दोस्तो के लिए
क्या ये आदत भी बुरी हैं?

नासिक तू एक ग़ज़ल हैं ..

नासिक तू एक गजल हैं मेरी
नज़ाकत से तू खून में लथपत हैं भरी

हर किसी को तेरी पनाह मिली
बाहोंमें तेरे गंगामैया उभरी

कौन बच पाया तेरी आशिकी से
फूलों के शहर में दुल्हन तू प्यारी

नासिक तू एक ग़ज़ल हैं मेरी
रिश्ता अपना कान्हा और बांसूरी

खिलते बाग में तेरे हरएक फूल
ना मिली नफरत ना कोई दूरी

पनपा नहीं कोई मजहबी शैतान
अमन के रखवालों की तू माता प्यारी

नासिक तू एक ग़ज़ल हैं मेरी
तेरी बाहों में अंतिम साँस निकले मेरी

लोग मौत के बाद भी आते हैं
अपनी खाँक डालने ओ प्यारी

जो एकबार बस जाए तेरी डगर में
उसे अपनाही बना लिया राम दुलारी

दो योद्धा :
सावरकर और आंबेडकर

अक्सर लोग कहते हैं कि
दोनों अलग अलग किनारे हैं
लोगों को यह पता नहीं हैं कि
दोनों एकही नदीया के किनारे हैं।

रास्ते हो सकते हैं अलग अलग
मंजिल उनकी एकही थी
एक गया घर छोडकर दूसरा घरमें ही
समाज प्रबोधन करता रहा
बात दुनिया की सोच बदलने की थी।

लोग अंदाजा लगाता रहे
यह योद्धा था वह सिकंदर था
दोनों के हौसले आसमान छुने वाले
एक नीला आसमान तो दूसरा केसरीया था।

फिर भी लोगों ने बाट लिया दोनों को
जो मक्सद था उनका वह तोड़ दिया
जो लढ़ाई लड़ी थी उन दोनों ने
वह किलाही दुश्मनों को फिर सौंप दिया।

मैं एक आम का पेड़ हूँ

मै एक आम का वो पेड़ हूँ
जिसका सरेआम लोग
इस्तेमाल करते हैं

सरेआम आमरसभी पिते हैं
कोई बचा नहीं जिसने
मेरे आम खाए नहीं

कोई राहगीर था
कोई हमसफर था
कोई मौकापरस्त था

कोई जानकर अंजान था
किसीने मुझपर लगे
आम गीने हैं

किसीने आम के लिए
पत्थर बरसाए हैं
मैं खामोश खड़ा रहता हूँ

किसीको आम
किसीको छाँव
किसीको लकडियाँ

किसीको दो पल का सुकून देता हूँ
सिर्फ तुमही हो
मुझे आबाद रखती हो

सिर्फ तुमही हो
मिट्टी बनकर मुझे
हमेशा खड़ा रखती हो।

जिंदगी अजनबी बन गई जबसे

हर पल मुझे इन्तेहान लगता हैं।
तन्हाँई लिपट गई सीने सें

दो पलका फासला भी दूर लगता हैं।
दो पल शब को रातों का डर लगता हैं?

गीत गुणगुणातो हुँ अपने खुर्शीसे
कभी मायुसी का खौफ नहीं लगता हैं।

चलता हूँ मै अपने खबोंकी रास्ते सें
टुट जाये सपने ऐसा भी नहीं लगता हैं।

मौसम वही....कश्ती वही हैं

मौसम वही....कश्ती वही हैं,
बदला तो सिर्फ वह हमराही हैं।

मकान वही...इल्जाम वही
सोचने को मजबूर कौन सही हैं।

कश्ती बदली...रिश्ते बदले
साहील भी वक्त के साथ बदले हैं।

सागरभी अपनी जगहपर
डूबने वाले वही, डूबाने वाले बदले हैं।

शायरी वही हैं, शायर वही हैं,
किताबों के पन्ने ही किताबों से निकले हैं।

कलम वही...मकान वही हैं
जिसके लिए लिखने थे, वही बदले हैं।

वंदे मातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्
सस्य श्यामला मातरम् ।।धृ।।

शुभ्र जोत्स्नां पुलकितयामिनीम्
फुल्ल कुसुमित दुमदल शोभिनीम्
सुहासिनी सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम् ।।१।।

कोटी कोटी कंठ कलकलानिनाद करांचे
कोटी कोटी भुजैधृत खर करवाले
के बोले मा तुमी अबले
बहुबलधारिणीम नामामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणी मातरम् ।।२।।

तुमि विद्या तुमि धर्म
त्वं हि प्राणः शरिरे
बाहु ते तुमि मा शक्ती
तोमारइ प्रतिमा गाडि मन्दिरे मातरम ।।३।।

इत्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी नामामित्वाम्
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्
सुजलाम् सुफलाम् मातरम् वंदेमातरम् ।।४।।

श्यामला सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणी भरणी मातरम् वंदे मातरम्।।

– बकीमचंद्र बॅनर्जी

वंदे मातरम्
(मराठी अनुवाद)

हे माते मी तुजला वंदन करतो
सुजल सिंचिता सुफल शोभिता
दक्षिण वायुच्या मंद लहरींनी
शीतला धान्यराशीमुळे हरित
श्यामला माते तुला वंदन

धवल चांदण्याच्या बरसातीने
जिच्या रात्री पुलकित आहेत
बहरलेल्या फुलझाडांनी जी
सुशोभित आहे सुहास्यवदना
सुमधुरभाषिणी
माते तुला वंदन करतो

तु वरदायिनी तु सुखदायिनी
कोटी कोटी कंठातुन निनादणाऱ्या
जयघोषामुळे तु शक्तीशाली
आणि कोटी कोटी हातांनी
उंचावलेल्या त्या धारदार तलवारी
तुला अबला कोण म्हणेल माते
तु बहुबलवती तु सर्वांना तारणारी
माते तुजला वंदन करतो

शुत्रसैन्याला पिटाळुन लावणारी
माते तू विद्या तू धर्म तू हृदय
तू मर्म तुच आमच्या देहातील प्राण
आमच्या बाहुचे बळ तू माते तुला
वंदन तुच भक्ती आमची

आमच्या देवळा राऊळांत तुझीच
मुर्ती कारण तु आहेस दहा
शस्त्रेधारण करणारी दुर्गा
कमलदळांत लीलाणिहार करणारी
तु कमला तु भारती तु विद्यादायिनी
शब्दशक्ती तु माते तुला वंदन करतो

हे ऐश्वर्यदेवते तु अमंल
आहेस अतुल आहेस
सुजला सिंचिता सुफल शोभिता
माते तुच आहेस
मी तुला नमन करतो

माते तु श्यामला पण तू
सरला तू सुस्मिता या सर्वांनी तु
परिपुर्ण अलंकृत आहेस आम्हा
सर्वांचे भरण पोषण पालनकर्ती
तुच आहेस माते तुला मी वंदन करतो

माँ तुझे सलाम

(हिंदी–उर्दू अनुवाद)

हरियाली में गुलशन हो
गुलशनमें बहार हो
दिल को छु लेनेवाली हल्कीसी
हवा हो तुम बागबगियों मे नया
खुमार लाने वाली तुम हो
चौहवी के चाँद में नहाकर
जिसकी रातें पाक होती हैं
माँ तुझे सलाम

बहरे हुवे चमन में
दिलो दिदार होता हैं
जिसके मुस्कान में जान हैं
लब्जों मे मिठास हो
माँ तुझे सलाम

तुही तो कायनात हैं
तुही दिलोंका सुकुन हैं
करोड़ो करोड़ो जुबाँ पे
जिसका जिक्र होता हैं और
करोडो हाथों में जिसके लिए
समशेर आमदा हो
कौन कहता हैं माँ तुम अबला हो,
माँ तुझे सलाम

तुमही तो कायनात हैं सासों मे
जान फूँकनेवाली तुम हो
दिलो में बसा हुआ अंधेरा
मिटाने वाली तुम हो,
माँ तुझे सलाम,

तुमही ग्यान का समंदर
तुमही मजहब, तुमही धडकन
तुमही हकिकत तुमही हमारी
दिलों की जान हो
हमारे बाजुओ में तुमही शक्ति हो
माँ तुमही हमारी इबादत हो
तुमही हमारी उल्फत हो
तुमही हमारी जमीर हो,
तुमही हमारा जज्बा हो
तुमही हथियारों का जकीरा हो
माँ तुझे सलाम,

कमलपर खिलनेवाला शबनम हो तुम
माँ सही तालीम देनेवाली हो
तुमही वतन की शान हो
माँ तुझे सलाम

माँ तुमही कायनात हो
तुमही कुदरत हो
तुमही ईमान हो
कौन तुझे तोल सकता हैं
इस हरेभरे वतन की हरियाली में
दुल्हन की तरह सजी हो
माँ तुझे सलाम

तुमही धरोहर हो
तुमही इस मिट्टी की नींव हो
सारी कायनात तुझपर नाझ करती हैं
माँ तुझे सलाम

सांईबाबा तेरी शिर्डी मेरा चारोधाम

सांईबाबा तेरी शिर्डी मेरा चारोधाम है
सांईराम तुझे मेरा शतशत प्रणाम है

नाम लिया ओमसांई
मिल जाते शंकर भगवान

नाम लिया सांईराम
दिल में बसजाते सांईराम

नाम लिया सदगुरू
समर्थ बोले मैं सांईराम

सांईबाबा तेरी शिर्डी मेरा चारोधाम है
सांईराम तुझे मेरा शतशत प्रणाम है

तेरी द्वारकाही काशी
तेरी झांकीही गंगासागर

तेरी परछाई जहाँ पड़ी
वही मेरा विश्वसागर

तुमने पावन किया है
हमारा सारा संसार

सांईबाबा तेरी शिर्डी मेरा चारोधाम है
सांईराम तुझे मेरा शतशत प्रणाम है

सारे तिर्थोंका पुण्य
शिर्डी में मुझको मिलता है

जन्नत पता नहीं पर
रास्ता तेरे दर से जाता है
मैं ना जानू पाप पुण्य
कर्मों का फल तुही देता है

सांईबाबा तेरी शिर्डी मेरा चारोधाम है
सांईराम तुझको मेरा शतशत प्रणाम है

सांई मेरा मौला

सांई मेरा मौला सांई मेरा रब है
सांई मेरा राम सांई मेरा सब है

अलग अलग नाम से तुझे
हर कोई पुकारता है

भक्तहो कोई भी सांईबाबा
तुही उनके करीब होता है

दुख हो हर पीडा सताए
बाबा तुही तो याद आता है

सांई मेरा मौला सांई मेरा रब है
सांई मेरा राम सांई मेरा सब है

तेरे शरण में जो आया
सांई तेराही हमेशा का हो जाता है

एकबार ले तेरा नाम
दुख सारा कापुर हो जाता है

रख दे तेरे चौखटपर सर
हर मन्नत तू पुरी करता है

सांई मेरा मौला सांई मेरा रब है
सांई मेरा राम सांई मेरा सब है

मिल जाये जिसे सांईबाबा तू
उसे क्या दुनिया याद रहे

जिंदगी के खिलाफ
उसके क्या फरियाद रहे

मिले सारा सकुन तेरे नाम से
जिंदगीभर वह आबाद रहे

सांई मेरा मौला सांई मेरा रब है
सांई मेरा राम सांई मेरा सब है

भर दो मेरी झोली

सांईबाबा भर दो मेरी झोली
तेरे दरसे गया न कोई खाली

रख दिया तेरे दर पर मेरा सिर
मैं मैं न रहा हो गया तुम्हारा

सांईबाबा तेरा भक्त तुझे
हमेशा होता है जानसे प्यारा

सांईबाबा याद है हमको
तुमने दिए हुए वचन ग्यारह

सांईबाबा भर दो मेरी झोली
तेरे दर से गया न कोई खाली

दिल में रखी मैंने लाख मन्नते
तुझे क्या बताये मेरे सांई

नहीं बताया तो भी तू अंतर्यामी
पढ लेता दिल की बात सांई

इरादे तुम्हारे अगर नेक हो
मायुस नहीं होने देता सांई

सांईबाबा भर दो मेरी झोली
तेरे दर से गया न कोई खाली

जिंदगीभर रहा सांई मेरा
बनके मस्तमौला फकीर

बदलता गया सांई मेरा
हर भक्तों की तकदिर

तुफानों को हमेशा झेला सांई ने
अपने भक्तों के खातिर

सांईबाबा भर दो मेरी झोली
तेरे दरसे गया न कोई खाली

सांई तेरा नामही बिगड़े बना दे काम

सांई तेरा नामही बिगड़े बना दे काम
बोलो सांई राम सांई राम सांई राम

नाम तेरा जिसने भी लिया
सांई तेरा आशिष पाया
जिसने तुझसे दिल लगाया
गम सारे वो भूल गया

सांई तेरा नामही बिगड़े बना दे काम
बोलो सांई राम सांई राम सांई राम

नई उम्मीद नई आशा
मिले जो तेरा नाम लेता है
हर तुफानों से लड़ने की
उम्मीद तुही तो जगाता है

सांई तेरा नामही बिगड़े बना दे काम
बोलो सांई राम सांई राम सांई राम

सांई तेरा आशिष हरसफर
बनकर हमेशा साथ होता है
सांई तेरा एक नाम
मुरादे दिल की पुरी करता है

सांई तेरा नामही बिगड़े बना दे काम
बोलो सांई राम सांई राम सांई राम

सांई का संदेश

सांई ने श्रद्धा सबुरीका संदेश दिया है
जिंदगी का सबक तूने ही सिखाया है

श्रद्धा जिसके पास है
चंचल ना हो उसका मन
शुद्ध होता है उसका तन
मिले उसे शांती का धन
पावन पुनित हो उसका जीवन

सांई श्रद्धा सबुरी का संदेश दिया है
जिंदगी का सबक तुम ने सिखाया है

सबुरी जिसके पास है
हर संकट सीने पर झेलता है
हर दुख के सामने जाता है
आशाओंपर विश्वास रखता है

सांई श्रद्धा सबुरीका संदेश दिया है
जिंदगी का सबक तुमने सिखाया है

श्रद्धा और सबुरी साथ हो तो
जिंदगी का हर गम कम लगता है
सांई श्रद्धा सबुरीके संदेशमें
सांई का जीवन प्रतिबिंबत होता है।

सांई तुझ में देखता हूँ

सांई तुझ में देखता हूँ भारत मेरा
सब धर्म को खुला द्वार तुम्हारा

हिंदू मुस्लीम सारे भाई
पंजाबी हो या सिख ईसांई
हर कोई तेरे दर पर आता है

भेदभाव यहाँ नहीं कोई
सबको एकही द्वारका माई
एकता संदेश यहाँ तो मिलता है

सांई तुझ में देखता हूँ भारत मेरा
सब धर्म को खुला द्वार तुम्हारा

उँच–नीच का यह भेद नहीं
समता में यहाँ कोई छेद नहीं
हर ईन्सा साईभक्त कहलाता है

मंदिर मशिद ना कोई विवाद
यहाँ होता सिर्फ सांई संवाद
तेरे लिए भारत यहाँ एक होता है

सांई तुझ में देखता हूँ भारत मेरा
सब धर्म को खुला द्वार तुम्हारा

ना कोई स्वार्थ यहाँ दिखेगा
ना कोई हेतू यहाँ मिलेगा
सिर्फ श्रद्धा सबुरी का संदेश मिलता है

मिले हर पीड़ासे मुक्ति
मिले दुखसे लढने की शक्ति
बस तेरे नाम से ही हौसला बुलंद होता है

सांई तुझ में देखता हूँ भारत मेरा
सब धर्म को खुला द्वार तुम्हारा।

सांई तेरे ग्यारह वचन

सांई तेरे ग्यारह वचन
मानता है उसे मेरा मन ।।धृ।।

शिर्डी में जो कोई आएंगे
उसके सारे संकट मिट पाएंगे ।।१।।

मेरी समाधि के दर पर जोगी आएगा
हर गम से मुक्ति पाएगा ।।२।।

मै मुक्ति पाया हूँ शरीर को छोड़कर
लेकिन भक्तों के खातिर आवे दौड़कर ।।३।।

समाधि मेरी मन्नत पूरी करेगी
अगर तुम्हारी श्रद्धा सच्ची होगी ।।४।।

सांई तेरे ग्यारह वचन
मानता है उसे मेरा मन ।। धृ।।

मैं हूँ हमेशा चिरंजीव ये सच्चाई है
अनुभव से बोलो सत्य. मेरा दाता सांई है ।।५।।
मेरी शरण में आकर मायूस हाकेर गया,
ऐसा कोई आजतक सामने नहीं आया।।६।।

जो चाहेगा मुझे जिस जिस तरह
उस के लिए मेरी उतनीही होगी चाह ।।७।।

सांई तेरे ग्यारह वचन
मानता है उसे मेरा मन ।।धृ।।

भक्तोंका बोझ उठाऊँगा हरदम हमेशा
यह वचन है मेरा नहीं है झूठी आशा।।८।।

हमेशा साथ देने के लिए आया हूँ
आपकी हर मुराद पुरी करने आया हूँ।।९।।

तन मन वाणी से जो मेरा हो गया
हमेशा उसका अहसानमंद हो गया।।१०।।

सांई बोलेगा उसका होगा बेडा पार
शरण में आया जो भक्त मेरे द्‌वारपर ।।११।।

सांई तेरे ग्यारह वचन
मानता है उसे मेरा मन ।।धृ।।

चलो चले साई के
चेले शिर्डी चले

चलो साईबाबा की पालकी निकली
सांई धून सुनाई देती गली गली ।

पालकी जिस डगरसे गुजरती है
रास्तों के कंकड़ों को फूल बना देती है।

बारिश हो धूप किसे फिक्र होती है
ले साई का नाम उसे चिंता क्या होती है?

यहाँ उम्मीद हर दिल में पलती है
उल्लास के साथ पालकी निकलती है।

शहनाई सांई आरती की गूंजती है
भक्ति की परमसिमा यहाँ पार होती है।

साई के दीवाने

सांई के दीवाने
ऐसा कैंसे माने
कंधेपर सांई की पालकी
चलो चले सांई के चेले शिर्डी चले

दिल में बसा सांई
जुबाँपर नाम सांई
जोश में चले सांई के चेले
चलो चले सांई के चेले शिर्डी चले

नया आज सवेरा
मिटे दुखका अंधेरा
दर्शन हो पाए तेरे इसी आस पर निकले
चलो चले सांई के चेले शिर्डी चले

चलते सुबह शाम
लेकर सांई तेरा नाम
हाजिर होने साई दरबार में चले

वह बात कुछ ओर थी

यह बात कुछ और हैं।
शराफत की बस्ती में
ये तो सफेद चोर हैं।

चोरों को चोर क्यों कहे?
वही रियासत चलाते हैं।
चोरों को दोष क्यों देंगे?
हमही उन्हे संसद भेजते हैं।

वह बात कुछ और थी,
इस बात का शोर हैं।
बेबस हैं इन्सानियत,
बेईमानों का यहाँ जोर हैं।

इंसानीयत की क्या बात।
इन्सान ही बिके जाते हैं।
बेच चुके हैं जमीर को,
हराम की कमाई खाते हैं।

वह बात कुछ और थी,
ये बात थोड़ी कमजोर हैं।
नकली नहीं असलीयत,
कुछ अखबारवाले भी चोर हैं।

मौका मिला सुनाने को,
यही बात हम दोहराते हैं।
आप सुन तो रहे हैं,
और लोग उठकर जाते हैं।

शायरी

पहचान वही है
नकाब कुछ बदले हैं।

दिलेजान वही हैं
तेवर बदलकर निकले हैं।

मंजिले वही है
कुछ ज्यादा फासले हैं।

खुदा वही है
इबादत के रिवाज खुलेआम।

जैसे बैठे है आजकल
करके कोई कत्लेआम।

पूछते हैं हालहवाल बहारों की
पूछती हैं बस हालत अपनी।

वे आए इस चमन में मुद्दतो से,
दिल को काफी हैं तसल्ली इतनी।

उनकी हर अदा का
हम अंदाजा लगा न सके।

वे मिट गए मेरे लिए
हम कुर्बान न हो सके।

शायरी

माना की तेरी वफा सही
हम भी तो बेवफा नहीं।
सितम करते हो तुम
फिर भी हम खफा नहीं।

सितम करते हो आँखों से
और दिलको मना लेते हो
हम दिल को समझाते हैं
आँखों से आँसू बह जाते हैं।

आसान नहीं होता हैं
अपने किसी को भूलाना।
भूलने के खयाल से ही
यादों का हमे यूँ सताना।

जफा करके भी जब
वह वफा की बातें करते हैं।
अपने हर सितम को
वो शरारत कहते हैं।

लाख उम्मीदे सजाकर

लाख उम्मीदे सजाकर
तेरे दर पे हम आते हैं।
सुनकर तेरा हाले बयाँ
चुपचाप लौट जाते हैं।

डर लगता हैं अब मुझे
कही होश न आ जाए।
दर्द छिपाया बेहोशी में
जख्मोंका अहसास न हो जाए।

तुझे मिलकर हमेशा,
एक नशा मुझपर चढता हैं।
जख्मो के सारे मेरे
नहीं दवा की तरह भूलाता हैं।

नशा बनकर तू यूँही
जिस्म में सिमटी जाती हो
रहते नहीं हम अपने
दिल में इतनी समा जाती हो।

मैं आजकल खामोशही रहता हूँ

सच हैं मैं आजकल खामोशही रहता हूँ,
मैं बयाँ न हो जाऊँ इस बात से डरता हूँ।

लोग डरते हैं आजकल जिंदगी से,
गीत जिंदगी के गाने से कतराता हूँ।

रिश्ते ही खत्म करने पर तुले सब,
मैं प्यार की बातें करने को हिचकिचाता हूँ।

सच हैं मैं आजकल खामोशही रहता हूँ,
मैं बयाँ न हो जाऊँ इस बात से डरता हूँ।

लगता नहीं कोई चेहरा पहचानका,
नकाबपोशो की दुनिया से दूर भागता हूँ।

लोग मशगुल हैं न जाने किस भ्रम में ,
सच का आईना उन्हीं से छिपाता हूँ।

सच है मैं आजकल खामोशही रहता हूँ,
मैं बयाँ न हो जाऊँ इस बात से डरता हूँ।

कभी रिश्ता था मेरा भी इस आवाम से,
उसी आवाम के वहशीपन से डरता हूँ।

निगल गई आवाम तमाम वसूलों को,
उन्हीं के वसुलों की बातों पर हँसता हूँ।

सच हैं मैं आजकल खामोशही रहता हूँ,
मैं बयाँ न हो जाऊँ इस बात से डरता हूँ।

आज दी है हिम्मत मुझे मेरी शायरी ने,
यही दो बातें आप से बेखौफ करता हूँ।

बयाँ हो जाऊँ अपनी बिरादरी में खुलकर,
समझलेंगे आप मुझे इस विश्वास से विदा लेता हूँ।

सच हैं मै आजकल खामोशही रहता हूँ,
मैं बयाँ न हो जाऊँ इस बात से डरता हूँ।

रिश्ते भी आजकल फर्निचर की तरह

रिश्ते भी आजकल फर्निचर की तरह
कुछ दिन बीतनेपर पुराने जैसे हो जाते हैं

सजाया था जिसे दिवान–ए–खाने में सदा
कुछ दिन बितनेपर कबाड़खाने की तरह हो जाते हैं।

रिश्तों के रंग भी दीवारों की 'रंगो' की तरह
मौसम बदलते ही फिके जो पड़ जाते हैं।

सपनो में रंग भरे जाते थे जिन रंगो से
वे रंग वक्त के साथ साथ 'रंग' बदलते हैं।

ऐसे दौर में तुमसे मेरा रिश्ता बना है
चलो इस रिश्ते को हम बेनामही रखें ।

नाम दिया तो वह भी मुकर जाएगा कभी,
इस बेनाम रिश्तों को ही हम सलाम करते हैं।

कौन कहता हैं हम मजबुर होते हैं

कौन कहता हैं हम मजबुर होते हैं
माना की वे हम से अब दूर रहते हैं।

अब फासलों का डर लगता नहीं हमें
उनके दिल के बहुत करीब रहते हैं।

मुलाकात होती नहीं उसका रंज नहीं
यादों मे एक दूसरे के हम रहते हैं।

रहते जब कभी तन्हाई में हम दोनों
चाँद को देखकर एक दूजे से बातें करते हैं।

मिलते कभी बरसो के बाद एकदूजे से
नजरों से ही हाल अपना बता देते हैं।

लेखक परिचय

प्रा. गिरीश चत्रु पाटील

शिक्षा : एम.ए. (राज्यशास्त्र) एम. ए. (इतिहास)
बी.ए. (एम.सी.जे.) बी.एड्
साहित्यभूषण, उर्दुल लेखन डिप्लोमा

अध्यापक : अॅम्रो ज्युनिअर कॉलेज ऑफ आर्टस्,
सायन्स अॅण्ड कॉमर्स, राजुर बहुला
नाशिक - ४२२ ०१०.

प्रकाशन : स्मृतींचा झंझावात, सुगीचे दिवस और
बापाचा सातबारा मराठी काव्यसंग्रह ।
प्रेमसागर, कोहीनूर, माय, बाप और इंद्रधनुष्य
इन प्रतिनिधिनीक काव्यसंग्रहों में सहभाग ।

हिंदी : कवी सम्मेलनों में रचनायें सादर की है ।

अन्य : सावित्रीबाई फुले पुना युनिर्व्हसीटी में
व्याख्याता और ग्रंथअन्वषेक (१८ साल)

पत्रकारितामें भी सक्रीय ।

978 93 85361 07 4

किमत रू.६०/-